

1. पूर्व वैदिक काल (1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.)

इस काल में आर्य सभ्यता का प्रारंभ हुआ, जब आर्य उत्तर-पश्चिम भारत (पंजाब क्षेत्र) में बस गए।

यह समय राजवंशों का नहीं बल्कि जनपदों (tribal polities) का काल था।

समाज “जन” और “विष” नामक समुदायों में बँटा था, और शासन राजन् नामक सरदार के हाथ में रहता था।

इस काल में किसी स्थायी राजवंश का उदय नहीं हुआ, किंतु भरत, तृक, यदु, पुरु आदि जनजातियाँ प्रसिद्ध थीं।

प्रमुख ग्रंथ: ऋग्वेद।

2. उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू. – 600 ई.पू.)

इस काल में आर्यों का प्रसार पंजाब से गंगा-यमुना दोआब तक हुआ।

स्थायी राज्यों का गठन प्रारंभ हुआ — जनपदों का विस्तार हुआ।

“राज्य” की अवधारणा विकसित हुई।

कुरु, पांचाल, कोसल, काशी, विदेह आदि शक्तिशाली राज्य बने।

विदेह के राजा जनक प्रसिद्ध थे।

समाज में वर्ण व्यवस्था दृढ़ हुई और लौह धातु के प्रयोग से कृषि में प्रगति हुई।

3. महाजनपद काल (600 ई.पू. – 321 ई.पू.)

लगभग 16 महाजनपदों का उल्लेख अंगुत्तर निकाय और महावस्तु में मिलता है।

इनमें प्रमुख थे — मगध, कोशल, वत्स, अवंति, कुरु, पांचाल, गांधार, काशी आदि।

इस काल में कुछ महत्वपूर्ण राजवंश उभरे:

राज्य प्रमुख राजवंश/शासक विशेषता

मगध हर्यक (बिंबिसार, अजातशत्रु), शिशुनाग, नंदभारत में प्रथम साम्राज्य की नींव
कोशल प्रसेनजित बुद्ध के समकालीन
अवंति चंडप्रद्योत वाणिज्य एवं राजनीतिक शक्ति का केंद्र
वत्स (कौशाम्बी) उदयन बौद्ध व जैन ग्रंथों में प्रसिद्ध

4. मौर्य साम्राज्य (321 ई.पू. – 185 ई.पू.)

चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश का अंत कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

चाणक्य (कौटिल्य) उनके महामंत्री थे, जिन्होंने अर्थशास्त्र की रचना की।

बिंदुसार और अशोक महान (273–232 ई.पू.) ने साम्राज्य को चरम पर पहुँचाया।

अशोक के काल में बौद्ध धर्म का प्रसार एशिया तक हुआ।

यह भारत का पहला एकीकृत साम्राज्य था।

5. उत्तर-मौर्य काल (185 ई.पू. – 200 ई.)

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्य बने —

(क) शुंग वंश (185 – 73 ई.पू.)

संस्थापक: पुष्यमित्र शुंग (पूर्व मौर्य सेनापति)

राजधानी: पाटलिपुत्र

हिंदू धर्म का पुनरुत्थान और बौद्ध विहारों की पुनर्रचना

(ख) कण्व वंश (73 – 28 ई.पू.)

अंतिम शुंग राजा देवभूति की हत्या के बाद स्थापित।

अंततः आंध्र (सातवाहन) द्वारा प्रतिस्थापित।

6. दक्षिण भारत में सातवाहन (आंध्र) वंश (230 ई.पू. – 220 ई.)

संस्थापक: सिमुक

प्रसिद्ध शासक: गौतमिपुत्र शातकर्णि

राजधानी: प्रतिष्ठान (पैठण)

यह दक्षिण भारत का पहला बड़ा साम्राज्य था, जिसने उत्तर भारत से व्यापारिक संबंध बनाए।

7. उत्तर-पश्चिम भारत में विदेशी राजवंश (200 ई.पू. – 300 ई.)

1. इंडो-ग्रीक (यवन) — मेनांडर (मिलिंद) प्रसिद्ध; मिलिंदपन्हो ग्रंथ में उनका उल्लेख।

2. शक (साइथियन) — मौस, रुद्रदामन (गिरनार अभिलेख)।

3. पार्थियन (पहलव) — अल्पकालिक शासन।

4. कुषाण — कनिष्क महान, जिसने चतुर्थ बौद्ध संगीति कराई; राजधानी पुरुषपुर (पेशावर)।

8. गुप्त साम्राज्य (320 – 550 ई.)

संस्थापक: श्रीगुप्त, विस्तारक: चंद्रगुप्त प्रथम।

समुद्रगुप्त (प्रयाग प्रशस्ति – हर्षवर्धन द्वारा वर्णित) ने उत्तर भारत को एकीकृत किया।

चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के समय स्वर्णयुग: कला, विज्ञान, खगोल, गणित, साहित्य में उत्कर्ष।

आर्यभट्ट, कालिदास, वराहमिहिर जैसे विद्वान इसी काल में हुए।

550 ई. के बाद हूणों के आक्रमण से साम्राज्य का पतन हुआ।

9. पश्चात-गुप्त संक्रमण काल (500 – 550 ई. के बाद)

उत्तर भारत में मौखरी, वाकाटक, गुप्तोत्तर राजवंश, और हर्षवर्धन (606 ई. में उदय) की नींव इसी संक्रमण से रखी गई।

संक्षिप्त सारणी

काल	प्रमुख राजवंश / शक्ति केंद्र	समयावधि
वैदिक जन	भरत, पुरु, यदु, कुरु	1500-1000 ई.पू.
उत्तर वैदिक राज्य	कुरु, पांचाल, कोशल, विदेह	1000-600 ई.पू.
महाजनपद काल	मगध (हर्यक, शिशुनाग, नंद)	600-321 ई.पू.
मौर्य वंश	चंद्रगुप्त, अशोक	321-185 ई.पू.
शुंग-कण्व	पुष्यमित्र, वसुदेव	185-28 ई.पू.
शातवाहन	गौतमिपुत्र शातकर्णि	230 ई.पू.-220 ई.
इंडो-ग्रीक, शक, कुषाण	मेनांडर, रुद्रदामन, कनिष्क	200 ई.पू.-300 ई.
गुप्त वंश	चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य	320-550 ई.
संक्रमण काल	मौखरी, वाकाटक, हूण	500-550 ई.